वाक्य तथा वाक्य के प्रकार



वाक्य विचार :

- शब्दों का ऐसा व्यवस्थित, सार्थक समूह जो किसी विचार या भाव को पूर्णत: व्यक्त कर सकता है; वाक्य कहलाता है।
- **उदाहरण** - भारत की संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। इस वाक्य में प्रयुक्त सभी शब्द (पद) अर्थवान (सार्थक) हैं एवं व्यवस्थित शब्दों का यह समूह किसी विचार को प्रकट कर रहा है।

वाक्य के प्रमुख तत्त्व :

(क) सार्थकता: सार्थकता से अभिप्राय है- वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थवान होना। वाक्य में केवल सार्थक शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है पर कभी-कभी निरर्थक शब्दों का प्रयोग भी विशेष संदर्भ में सार्थक बन जाता है। जैसे-

- कुछ **पानी-पानी** पीकर जाना।
- मेरे सामने ज्यादा **चूँ-चपड़** करने की कोशिश मत करना।

उपर्युक्त वाक्यों में पानी-पानी, चूँ-चपड़ निरर्थक होते हुए भी सार्थक की तरह प्रयुक्त हुए हैं।

(ख) योग्यता : वाक्य में जिन शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है, उनमें अर्थ प्रदान करने की योग्यता या सामर्थ्य होनी चाहिए। जैसे-

'मैंने पानी खाया।'- वाक्य में प्रयुक्त तीनों शब्द सार्थक हैं पर शब्दों के इस समूह में वांछित अर्थ देने की योग्यता या क्षमता नहीं है। जबकि 'मैंने पानी पिया'- वाक्य में अर्थ प्रदान करने की योग्यता है, अत: यह वाक्य है।

(ग) आकांक्षा : आकांक्षा से आशय है- वाक्य अपने आप में पूरा होना चाहिए अर्थात् उसमें किसी शब्द की कमी के कारण अर्थ प्राप्ति की जिज्ञासा न बनी रही। जैसे-

'चाहता है', 'पढ़ना चाहता है', 'वह पढ़ना चाहता है'- तीनों में तीसरा वाक्य है। पहले दोनों में 'कौन', 'क्या'?

(घ) निकटता : वाक्य में शब्दों को बोलने और लिखने में उचित निकटता होनी चाहिए। यदि कहीं उचित विराम की आवश्यकता हो, तो वहाँ विराम चिह्नों का प्रयोग अपेक्षित है। बहुत रुक-रुककर या जल्दी-जल्दी बोलने से वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

(ङ) पदक्रम : वाक्य का सही अर्थ तभी स्पष्ट होगा जब उसमें प्रयुक्त सभी शब्द (पद) उचित क्रमों में प्रयुक्त किए गए हों। जैसे-

- मैंने केवल एक पत्र लिखा है।
- केवल पत्र एक है लिखा मैंने।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में एक जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। प्रथम वाक्य से अर्थ निकल रहा है कि मैंने केवल एक पत्र लिखा है, एक से अधिक नहीं या पत्र लिखने के अलावा और कुछ नहीं किया। जबकि दूसरे वाक्य से कोई अभीष्ट या इच्छित अर्थ नहीं निकल रहा है।

(च) अन्वय : अन्वय का अर्थ है 'मेल'। वाक्य में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों में कर्ता, कर्म, वचन, कारक, क्रिया आदि में उपयुक्त मेल होना चाहिए अन्यथा वह वाक्य शुद्ध नहीं कहलाएगा। जैसे-

- 'हम खाना खाता हूँ' - वाक्य में क्रिया का कर्ता से मेल नहीं है। 'हम' कर्ता के साथ 'खाते हैं' का प्रयोग होना चाहिए।

वाक्य के घटक :

जिन अवयवों को मिलाकर वाक्य की रचना होती है उन्हें वाक्य के घटक कहते हैं। संरचना की दृष्टि से वाक्य के प्रधान रूप से दो ही घटक होते हैं-

(1) उद्देश्य

(2) विधेय

अब इन दोनों के बारे में समझे।

(1) उद्देश्यः वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए वही उस वाक्य का 'उद्देश्य' है। इसके अंतर्गत कर्ता तथा कर्ता का विस्तार (विशेषण, संबंधबोधक, भावबोधक आदि) आ जाते हैं।

(2) विधेयः उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए वह 'विधेय' है। इसके अंतर्गत क्रिया, क्रिया विस्तार, कर्म, कर्म विस्तार आदि आ जाते हैं।

उदाहरण 1. सचीन आपके स्कूल आ रहा है।

2. बूढ़ा आदमी धीरे-धीरे चल रहा है।

3. हमारे हिंदी के अध्यापक ने हमें मनोरंजक कहानी सुनाई।

4. तारा का भाई नरेश कहानी की पुस्तक धीरे-धीरे पढ़ता है।

वाक्य क्रम	उद्देश्य		विधेय			
	कर्ता	कर्ता का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तार
1.	सचीन	-	आ रहा है	-	स्कूल	आपके
2.	आदमी	बूढ़ा	चल रहा है	धीरे-धीरे	-	-
3.	अध्यापकने	हमारे हिन्दी के	सुनाई	-	हमें कहानी	मनोरंजक
4.	नरेश	तारा का भाई	पढ़ता है	धीरे-धीरे	पुस्तक	कहानी की

वाक्य के प्रकार :

वाक्य का विवेचन मुख्य रूप से दो स्तरों पर किया जाता है- (1) अर्थ के आधार पर और (2) रचना के आधार पर । इस दो स्तरों के आधार पर वाक्य के प्रकार निम्नांकित है-

अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार :

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद है:

(1) विधानवाचक वाक्य : जिस वाक्य में कार्य के होने का अथवा करने का सामान्य कथन हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

- प्रियोदा सेवाभावी थी।
- डॉक्टरने आराम करने के लिए कहा था।
- वृक्ष हमें स्वच्छ वायु प्रदान करते हैं।

(2) निषेधवाचक वाक्य : जिस वाक्य में कार्य के न होने का या न करने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

उदाहरण - मैं आज खाना नहीं खाऊँगा।

- मरना मुझे कठिन नहीं लगता।
- वह घर नहीं जाएगा।

(3) प्रश्नवाचक वाक्य : यदि वाक्य में कोई प्रश्न किया जाय तो वह 'प्रश्नवाचक वाक्य' कहलाता है। इस तरह के वाक्यों में क्या, कौन, कहाँ, कैसे, कब, क्यों, किसलिए आदि का प्रयोग होता है। जैसे–

उदाहरण – इस नगरी का राजा कौन है ?

– राजा का नाम क्या है ?

– आप कहाँ रहते हैं ?

– इस की बकरी कैसे मरी ?

– तूने ऐसी मशक क्यों बनाई ?

– आप किसलिए वहाँ जाया करते हैं ?

(4) विस्मयादिवाचक वाक्य : यदि वाक्य में विस्मय, शोक, हर्ष, घृणा, खुशी आदि का भाव अभिव्यक्त हो तो उसे 'विस्मयादिवाचक वाक्य' कहा जाता है। जैसे–

उदाहरण – अरे ! इतना सुंदर गुलमर्ग !

– ओह ! यह क्या हो गया।

– वाह ! कितना सुंदर घर।

(5) इच्छावाचक वाक्य : जिस वाक्य में वक्ता की इच्छा, आशा, शुभकामना या शाप आदि अभिव्यक्त हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे–

उदाहरण – आपकी यात्रा मंगलमय हो।

– गुरुजी आ जाएँ तो अच्छा हो।

– भगवान करे, तुम सफल हो।

– जा, तुझे नरक में भी जगह न मिले।

(6) संदेहवाचक वाक्य : जिस वाक्य से किसी कार्य के होने में संदेह या संभावना का बोध हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–

उदाहरण – संभवतः आज वर्षा होगी।

– लगता है, मैंने इस व्यक्ति को कहीं देखा है।

– अब तक वह सो गया होगा।

(7) संकेतवाचक वाक्य : जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरे पर निर्भर करे अथवा एक कार्य का संकेत दूसरे कार्य से मिले, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे–

उदाहरण – परिश्रम करोगे, तो अवश्य सफलता मिलेगी।

– यदि वर्षा अच्छि हो तो फ़सल भी अच्छी होगी।

– यदि मौसम ठीक रहा, तो हम घूमने जाएँगे।

(8) आज्ञावाचक या विधिवाचक वाक्य : जिस वाक्य के द्वारा आज्ञा या अनुमति, प्रार्थना या निर्देश आदि का भाव प्रकट होता है, उसे आज्ञावाचक या विधिवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे–

उदाहरण – भिश्ती को निकालो, कसाई को लाओ। (आज्ञा)

– तुम जा सकते हो। (अनुमति)

– कृपया मेरी सहायता कीजिए। (प्रार्थना)

– यहाँ मत बैठो। (निर्देश)

रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार :

रचना या स्वरूप की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं-

(1) सरल या साधारण वाक्य : जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय हो उसे 'सरल या साधारण वाक्य' कहते हैं। जैसे- 'पिताजी पार्क में बैठे हैं।' विधान में 'पिताजी'-उद्देश्य है और 'पार्क में बैठे हैं' - विधेय है।

सरल वाक्य में एक वाक्य ही होता है। वाक्य के उद्देश्य में कर्ता-कर्ता विस्तार तथा विधेय में क्रिया-क्रिया का विस्तार-कर्म-कर्म का विस्तार आदि आ जाते हैं।

उदाहरण 1. भार्गव ने पढ़ा । (कर्ता-क्रिया)

2. भार्गव पढ़ रहा है। (कर्ता, क्रिया-विस्तार)
3. पड़ोस में रहनेवाला भार्गव पढ़ रहा है। (विस्तार कर्ता-क्रिया-विस्तार)
4. भार्गव ने पुस्तक पढ़ी। (कर्ता-कर्म-क्रिया)
5. भार्गव ने पिताजी को पुस्तक दी। (कर्ता-कर्म-कर्म-क्रिया)
6. भार्गव ने अपने प्रिय मित्र को कहानी की पुस्तक दी। (कर्ता-कर्म का विस्तार, कर्म-कर्म का विस्तार-कर्म-क्रिया)

(2) संयुक्त वाक्य : जिस वाक्य में दो उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक (योजक) अव्यय से जुड़े होते हैं, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं। जैसे- मैं पढ़ रहा हूँ और तुम लिख रहे हो।' वाक्य में दो उपवाक्य हैं एवं 'और' समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े हैं, अतः निर्देशित विधान संयुक्त वाक्य है। संयुक्त वाक्य के अंतर्गत जितने उपवाक्य होते हैं, वे स्वतंत्र होते हैं।

उदाहरण 1. मैं हूँ सत्यकेतु और पत्नी है कामना।

2. आपको सत्य बोलना चाहिए; परन्तु वह अप्रिय न हो।
3. तुम नहीं जा सके तो बेटे को भेज देते।
4. सालभर का खाता बंद करना है अतः विवरण शीघ्र भेजिए।

कभी-कभी संयुक्त वाक्यों में 'समुच्चयबोधक' अव्यय का लोप भी कर दिया जाता है, जैसे-

1. दुनिया में रहनेवाले रहेंगे, जानेवाले चले जाएँगे। ('और' का लोप)
2. क्या सोचा था, क्या हो गया। ('पर' का लोप)
3. काम किया है, पैसा तो लूँगा ही। ('इसलिए' का लोप)

(3) मिश्र वाक्य : जिस वाक्य की रचना एक से अधिक ऐसे उपवाक्यों से हुई हो, जिसमें एक प्रधान तथा अन्य वाक्य गौण हों, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं।

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और उसके आश्रित उपवाक्य हों, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं। प्रधान उपवाक्य में मुख्य कथन होता है तथा जिसका समर्थन, पूर्ति या विस्तार दूसरा आश्रित उपवाक्य करता है। इनमें से कोई भी उपवाक्य स्वतंत्र नहीं होता। दोनों को एक दूसरे की अपेक्षा होती है।

उदाहरण 1. मैं देखता हूँ कि तुम मेहनत नहीं करते हो।

2. हिरन ही एकमात्र ऐसा पशु है, जो कुलाँचों भरता है।
3. सविता को पुरस्कार मिला क्योंकि उसने एक अच्छा गीत सुनाया था।
4. यह वही भारत देश है, जिसे कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था।
5. सूरज उगा इसलिए अँधेरा भागा।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) वाक्य किसे कहते हैं ?

(2) वाक्य के घटक बताइए।

(3) सरल वाक्य किसे कहते हैं ?

(4) 'इस उपवन में सुंदर फूल खिले हैं।' वाक्य में से उद्देश्य और विधेय ढूँढ़िए।

2. अर्थ के आधार पर वाक्यों के प्रकार लिखिए :

(1) अहा! कितना सुंदर बच्चा है।

(2) एक गिलास दूध लाओ।

(3) राम अयोध्या के राजा थे।

(4) वहाँ पेड़-पौधें नहीं थे।

(5) आप कहाँ रहते हैं ?

(6) आपकी यात्रा मंगलमय हो।

(7) शायद मुझे ही अहमदाबाद जाना होगा।

(8) यदि वर्षा अच्छी हो तो फ़सल भी अच्छी होगी।

3. रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार लिखिए :

(1) घोड़ा ताँगा खींचता है।

(2) श्याम माखनचोर है इसलिए वह कहीं छिप जाता है।

(3) राकेश को बुखार आया इसलिए उसे अस्पताल भर्ती करवाया गया।

(4) पानी बरस रहा है।

(5) वह बाज़ार गई और उसने फल खरीदें।

(6) ऋषि कहते है कि सदा सत्य की विजय होती है।

(7) आचार्य ने कहा कि स्कूल तीन दिन बंद रहेगा।

(8) आप दिल्ली कब जा रहे हैं ?

4. सही उत्तरों का चयन कीजिए :

(1) अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं ?

(अ) दो (ब) चार

(क) छः (ड) आठ

(2) रचना की दृष्टि से वाक्य के कितने प्रकार हैं ?

(अ) एक (ब) दो

(क) तीन (ड) चार

(3) मनोज अध्यापक है- उद्देश्य छाँटिए।

(अ) मनोज (ब) अध्यापक

(क) है (ड) अध्यापक है

(4) गायत्री शिक्षिका है– विधेय छाँटिए।

(अ) गायत्री (ब) शिक्षिका

(क) है (ड) शिक्षिका है

(5) इन वाक्यों में कौन–सा वाक्य संयुक्त वाक्य है?

(अ) घर जाने पर वह खा लेता है।

(ब) वह खा लेता है जब भी घर से आता है।

(क) वह प्रतिदिन घर से खाकर आता है।

(ड) वह घर जाता है और खाकर आता है।

(6) इन वाक्यों में कौन–सा वाक्य मिश्र वाक्य है?

(अ) परिश्रम करने पर छात्र उत्तीर्ण हो गए।

(ब) उस छात्र ने परिश्रम किया और वह उत्तीर्ण हो गया।

(क) परिश्रम करनेवाले छात्र उत्तीर्ण हो गए।

(ड) जिन छात्रों ने परिश्रम किया वे उत्तीर्ण हो गए।

(7) 'भगवान आपका कल्याण करे'.... यह किस प्रकार का वाक्य है?

(अ) विधानवाचक (ब) संदेहवाचक

(क) इच्छावाचक (ड) विस्मयादिवाचक

(8) 'दादाजी स्वस्थ नहीं है'... यह किस प्रकार का वाक्य है?

(अ) प्रश्नवाचक (ब) निषेधवाचक

(क) संदेहवाचक (ड) संकेतवाचक

●